प्रहरी

अनिल कुमार मिश्र

Sample Copy. Not For Distribution

प्रहरी

Sample Copy. Not For Distribution

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-1-61813-840-8

Price: ₹ 205.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Sample Copy. Not For Distribution

प्रहरी

अनिल कुमार मिश्र

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution

Sample Copy. Not For Distribution

भूमिका।

यामिनी निस्तब्धता की चादर में लिपटी थी। अँधेरा अभी भी जड़ - चेतन सभी पर अपनी कालिमा का साम्राज्य फैलाये था क्योंकि निशिकर ने अपनी चाँदनी से निशा के सुनहरे आँचल को सजाने से मना कर दिया था। तन्हा, व्यथित, परित्यक्त रात की आँखों से अविरत आँसू निकले होंगे जिनकी बूँदों से भीगकर तृण-पात अभी तक गीले नजर आ रहे थे। अमीकर से ही तो निशि की सुन्दरता है, यही तो उसके माथे की बिन्दिया है। आज कुछ भी नहीं था। तरु-पल्लवों में रह-रहकर थोड़ी-सी सरसराहट जरूर थी लेकिन द्रुमों से टकराकर निकलने वाले शीतल पवन की सनसनाहट शायद यही कह रही थी कि मनहूस घड़ी आने वाली थी, ऐसा घटित होने वाला था जो ह्रदय को विशीर्ण कर देगा, व्यथित कर देगा।

इसके साथ ही एक और बात हुई। मित्रता और सौहार्द के वातावरण में रगों में अहर्निश बहने वाला शान्त लहू एकाएक उबल पड़ा और देशवासियों को पुकार उठा कि हे भारत के वीर सपूत, उठो, बदले की ज्वाला धधक रही है, अपनी आहुति दो। प्रभात हुआ तो तृण-पात, द्रुम -डालियाँ, पवन, सरिता, पर्वत श्रेणियाँ सभी दर्द के अथाह सागर में डूबे थे। उड़ी में दुश्मनों ने भारतीय सैनिकों पर छुपकर कायराना हमला किया था। उस हमले और बहादुर सैनिकों की शौर्य गाथा के सम्बन्ध में लिखने की इच्छा हुई और फिर पंक्तियों में कुछ शब्द सजे जो इस पुस्तक के आधार बने।

Sample Copy. Not For Distribution

इसके अलावे भी समाज और जीवन को छूती हुई कई कविताएँ इस पुस्तक में शामिल हैं जिन्हें नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। प्रभु का आशीर्वाद लेते हुए हमने पूरा प्रयास किया है कि आद्योपान्त रोचकता बनी रहे और जो भी संदर्भ लिये गये हैं उनका सरल, सहज और लालित्यपूर्ण शैली में सही आकलन हो सके। आप सबों का धन्यवाद करते हुए -

अनिल कुमार मिश्र,
लुधियाना।
13-4-2017

Sample Copy. Not For Distribution

आभार।

सबसे पहले पत्नी श्रीमती ललिता मिश्र तथा बच्चे श्रेया, शैली तथा आदित्य का आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने हर तरह से मेरी मदद की तथा मेरी जरूरतों का ख्याल रखा। बहन अनिता तथा भाई अरविंद का भी आभारी हूँ जिनका आज तक साथ मिलता रहा। इनके अलावे मेरे मित्र सरदार सिमरन छीना एवं कृपाल सिंह खैरा का भी आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने तकनीकी सहयोग प्रदान करके पुस्तक के प्रकाशन में मेरी मदद की।

अंत में, Educreation publishing house का धन्यवाद करना चाहूँगा जिन्होंने इस पुस्तक को प्रकाशित किया।

Sample Copy. Not For Distribution

समर्पण।

माँ-बाबूजी के चरणों में जिन्होंने जिन्दगी के सफर में हर कदम पर प्रोत्साहन एवं साथ दिया है।

Sample Copy. Not For Distribution

क्रम।

1	प्रार्थना।	1
2	वीरों का दिल से अभिनंदन।	3
3	वीरों ने ली जब अंगड़ाई।	5
4	शूरों के तन का है श्रृंगार।	7
5	दूर कहीं घर से जाकर।	9
6	मुझको सैनिक ही बनना है।	11
7	जख्मी जब वीर हुआ रण में।	13
8	सैनिक का अंत समय आया।	15
9	जाते - जाते कह गये वीर।	17
10	भारत की सेना है विशाल।	19
11	उरग।	21
12	पुकार।	24
13	प्रहार।	26
14	पाकिस्तान।	28
15	नरगोटा के शहीद।	30
16	आतंक।	32
17	विस्फोट।	34
18	मन।	36
19	डर।	37
20	हम मुस्कराये हैं।	39
21	नशा।	40
22	बेटी बचाओ।	42

Sample Copy. Not For Distribution

23	सम्मान।	44
24	पतन।	46
25	अकेला।	49
26	अजनबी।	51
27	विनती।	53
28	दर्द।	54
29	बादल।	56
30	विरह के गीत।	58
31	नदी की पीड़ा।	60
32	बेरोजगारी की जलन।	62
33	बेरोजगारी नाम है।	64
34	जिन्दगी।	66
35	जिन्दगी और मैं।	68
36	जिन्दगी से आज मेरा जंग है।	70
37	जिन्दगी तू साथ चल।	72
38	पल - दो-पल।	74
39	बूँद-बूँद जल गिरता घट से।	76
40	जिन्दगी 2..	78
41	काँटों का दर्द।	80
42	काँटों के संग।	82
43	पुष्प की पीड़ा।	84
44	पेड़ों की व्यथा।	86
45	वेलेंटाईन डे।	88
46	वर्षों से यह रास्ता वीरान क्यों है?	89
47	नव वर्ष की मंगल कामना।	91

Sample Copy. Not For Distribution

48	चाहत।	92
49	परिचय।	94
50	एकता।	96
51	अब किसकी तलाश है?	98
52	माँ।	100
53	विचलित नर को गीता का संदेश कहेगा।	102
54	गीता-ज्ञान।	104
55	संघर्ष।	106
56	तकदीर।	108
57	आँसू।	110
58	दिल मिला के आज हम कटुता मिटायें।	112
59	अहंकार।	114
60	गांव।	116

Sample Copy. Not For Distribution

Sample Copy. Not For Distribution

प्रार्थना।

बिन सहारे प्रभु मैं किधर जाऊँगा,
दूर मंजिल हमारी बिखर जाऊँगा।

जिन्दगी के भँवर से निकलना मुझे,
बंदगी जिसमें तेरी, वो करना मुझे,
तेरी दृष्टि पड़ी तो निखर जाऊँगा।
बिन सहारे प्रभु मैं किधर जाऊँगा।

तेज धारा नदी की न पतवार है,
डूब जाएगी नैया, भी आसार है,
कर दो कृपा तो मैं तर जाऊँगा।
बिन सहारे प्रभु मैं किधर जाऊँगा।

जाति , धरम की है चलती हवा,
निर्धन को मुश्किल से मिलती दवा,
तेरे दर से न खाली मैं घर जाऊँगा।
बिन सहारे प्रभु मैं किधर जाऊँगा।

Sample Copy. Not For Distribution

अंधियारी रातों में जलता है घर,
हिंसा की आँधी है, उजड़ा शहर,
चरणों में नव पुष्प धर जाऊँगा।
बिन सहारे प्रभु मैं किधर जाऊँगा।

नदियों में बहता है पानी बहुत,
सूखी धरा की कहानी बहुत,
प्यासा हूँ, प्यासे ही मर जाऊँगा।
बिन सहारे प्रभु मैं किधर जाऊँगा।

गुलज़ार कर दे तू उजड़ा चमन,
सारी मही और सारा गगन,
श्रद्धा से दर तेरा भर जाऊँगा।
बिन सहारे प्रभु मैं किधर जाऊँगा।
दूर मंजिल हमारी बिखर जाऊँगा।

Sample Copy. Not For Distribution

वीरों का दिल से अभिनन्दन।

सीमा पर डटकर खड़े हुए,
दो नयन शत्रु पर गड़े हुए,
हाथों में अस्त्र सुशोभित है,
उर से भय आज तिरोहित है।
जन-गण-मन करते हैं वन्दन,
वीरों का दिल से अभिनन्दन।

उत्साह हृदय में भरा हुआ,
पग अंगारों पर धरा हुआ,
अरि के हिम्मत को तोड़ चले,
तूफा की गति को मोड़ चले।
झुकता धरती पर आज गगन,
वीरों का दिल से अभिनन्दन।

करते भारत की रखवाली,
हत, जिसने बुरी नजर डाली,
बन जाते पल में महाकाल,
तन - मन इनका भारत विशाल।
जिनकी रक्षा में रघुनंदन,

Sample Copy. Not For Distribution

वीरों का दिल से अभिनन्दन।
जग स्वप्न संजोये सोता है,
सीमा पर क्या - क्या होता है,
छलनी होती इनकी छाती,
धारा लहू की बहती जाती।
बढ़ते रिपु का करते भंजन,
वीरों का दिल से अभिनन्दन।

Sample Copy. Not For Distribution

वीरों ने ली जब अंगड़ाई।

गगनचुंबी गिरिराज हिले,
दुश्मन के सर के ताज हिले,
बदली सरिता की तीव्र धार,
मच गया मही पर हाहाकार।
अरि दल पर फिर आफत आई,
वीरों ने ली जब अंगड़ाई।

वन के द्रुम सारे चिल्लाये,
भागो वीरों के दल आये
शीतल समीर छुपकर बोला,
बचना, अम्बर उगला शोला।
वे डरे देख निज परछाई,
वीरों ने ली जब अंगड़ाई।

झंझानिल कानन झोर चला,
तूफा सरि- तट को तोड़ चला,

Sample Copy. Not For Distribution

दिनकर बरसाये वह्नि प्रखर,
झुलसी धरणी , सारा अम्बर।
अरि-सूरत ऐसी मुरझाई,
वीरों ने ली जब अंगड़ाई।

बिखरे आतंकों के डेरे,
गम के साये उनको घेरे,
पद के नीचे की हिली धरा,
हिय पर भी जख्म बना गहरा।
प्रतिभट की बुद्धि चकराई,
वीरों ने ली जब अंगड़ाई।
अनिल।

Sample Copy. Not For Distribution

शूरों के तन का है श्रृंगार।

खून उबलता नश-नश में,
रोके पथ है किसके वश में,
आँखों से बरसे अंगारे,
नभ को देखे, टूटे तारे।
भुजबल असीम, अनुपम, अपार,
वीरों के तन का है श्रृंगार।

हैं वसन, जैसे मृगछाले हों,
तन के अभेद्य रखवाले हों,
गर्जन मानों है शेर कहीं,
दहके ज्वाला के ढेर कहीं।
दुर्धर्ष, प्रबल, घातक प्रहार,
वीरों के तन का है श्रृंगार।

डोले वसुधा जब चलें चाल,
जैसे आता हो क्रूर काल,
कर में थामे हैं नवल अस्त्र,
पथ पर जैसे गज खड़ा मस्त

Sample Copy. Not For Distribution

रिपु - दल ही का करना संहार,
शूरों के तन का है श्रृंगार।

ये घोर घटा - सी छा जाते,
पल भर में प्रलय मचा जाते,
पदचाप ध्वनित नभ में ऐसे,
मेघों पर तडित् रची जैसे।
करना भारत का पग पखार,
शूरों के तन का है श्रृंगार।
अनिल।

Sample Copy. Not For Distribution

दूर कहीं घर से जाकर।

अपनों ने कहा ठहर जा तू,
दो दिन के बाद शहर जा तू,
विगत दिवस तो आया है,
हृदय नहीं भर पाया है।
इतनी जल्दी जाता आकर,
दूर कहीं घर से जाकर।

कहा वीर, न रोक मुझे,
बढ़े कदम, न टोक मुझे,
घर-बार मुझे भी प्यारा है,
पर, राष्ट्र प्राण से न्यारा है।
चले शूर आज्ञा पाकर,
दूर कहीं घर से जाकर।

कहता डटकर परवाना है,
मरने से क्यों घबराना है,
मर जाऊँ मैं पर देश रहे,
जग में मेरा संदेश रहे।
दूँगा कुर्बानी मुस्काकर

Sample Copy. Not For Distribution

दूर कहीं घर से जाकर।
वृथा जन्म, न जो देश बचा,
मरकर जो न इतिहास रचा,
वीरों का सीस न झुक सकता,
तूफ़ा का वेग न रुक सकता।
हम बढ़ते राष्ट्रगान गाकर,
दूर कहीं घर से जाकर।

Sample Copy. Not For Distribution

Get Complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution

प्रहरी

पुस्तक की शुरुआत प्रार्थना के साथ सेना के वीर जवानों की शौर्य गाथा से हुई है।वे किन परिस्थितियों में दुश्मनों से लड़ते हुए देश की रक्षा करते हैं तथा अपने प्राण तक की बाजी लगा देते हैं। उन जवानों तथा देश, समाज की समस्याओं को छूती हुई कई कविताओं की सरस शैली में यहाँ प्रस्तुति हुई है। जीवन की अनिश्चितता एवं क्षणभंगुरता को दर्शाती हुई भी कई कविताएँ सम्मिलित हैं जो सहज ही ध्यान आकृष्ट करेंगी।

लेखक से संपर्क के लिए :
anilkumarmishra1363@gmail.com

EDUCREATION
PUBLISHING (Delhi)
www.educreation.in

Also available as an eBook
POETRY
ISBN 978-1-61813-840-8
9 781618 138408 >

Sample Copy. Not For Distribution